

अनादि-अनिधन

जिनागम पंथ जयवंत हो

सरग्व थुदि

स्वरूप स्तुति

॥३४५॥

रचयिता - प.पू.भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

उवओगमओ अप्पा अहं, जाणगसरग्वो ममि अहा।
 णिंदो अहमणिबंधो हं, आणंदकंद - सहज-महा ॥
 जाणिय सया दु संतमओ, णिय संतरस-पीउं सया।
 णिय संतरस-लीणम्भि हं, णिय चेद-धुवरग्वो अहा ॥ १ ॥

हूँ आत्मा उपयोगमय , ज्ञायक स्वभाव मेरा अहा ।
 निर्द्वन्द्व हूँ निर्बन्ध हूँ , आनन्दकन्द सहज अहा ॥ ॥
 नित शान्तरसमय जानकर, निज शान्तरस नित पानकर ।
 निज शांतरस में लीन हूँ, ध्रुवरूप निज अनुभव अहा ॥ १ ॥

अनादि-अनिधन

जिनागम पंथ जयवंत हो

सरग्व थुदि

स्वरूप स्तुति

अन्तर्मुख

रचयिता - प.पू.भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

महसु असंखपदेसेसुं , भयवंत - अप्पा णिवसदि ।

हं हुवमि परमप्पा सयं , परमप्प - रङ्गो विलसदि ॥

हं सिद्धकुल - अंसो हुवमि , हु दंसावदि भविदव्वदा ।

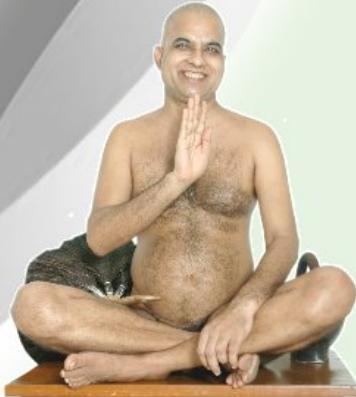
णिय सत्ति-अंसदो सिद्धो हं , दव्वस्स णिय णिय दव्वदा ॥२॥

मेरे असंखप्रदेश में , भगवान् आतम बस रहा ।

मैं हूँ स्वयं परमात्मा , परमात्मरूप विलस रहा ॥

हूँ सिद्धकुल का अंश मैं , बतला रही भवितव्यता ।

मैं सिद्ध शक्ति अंश से, निजद्रव्य की विज द्रव्यता ॥२॥



अनादि-अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

सरग्व थुदि स्वरूप स्तुति

अन्तर्मुख

रचयिता - प.पू.भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

रागादि-भाव द विगड़ीआ, दब्बम्मि णिय णवि दसणं ।

परदब्ब - परभावाण दु , रूवम्मि चिद णवि फंसणं ॥

पुह सब्बदो विर सब्बदो , अवियाररूवो ममि अहा ।

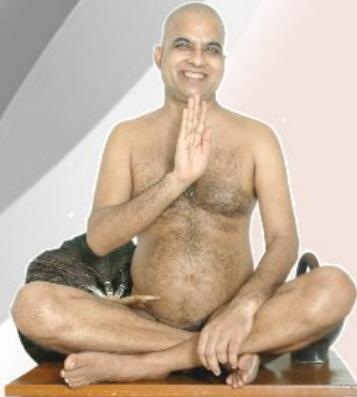
हं पूर - सहजसहावदो , जो ह वीदरागमओ बुवा ॥3 ॥

रागादि भाव विकार का , निजद्रव्य में दर्शन नहीं ।

परद्रव्य या परभाव का , चित् रूप स्पर्शन नहीं ॥

सबसे पृथक् सबसे विलग, अविकार रूप मेरा अहा ।

मैं पूर्ण सहज स्वभाव से, जो वीतरागमयी कहा ॥3 ॥



अनादि-अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

सरग्व थुदि स्वरूप स्तुति

अ॒र्जुन॑५८

रचयिता - प.पू.भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

गुण - दब्बदो हं धुवमहा , परिणमं णियदं पत्तो हं ।
परिणदं अत्तमओ खलु , सत्तीए णियदओ अत्तो हं ॥
कारण सयं हं कज्जमवि , सिवमग्नो मग्नफलं सयं।
"हं भावलिंगी संतो" जाणग- हुवमि सफल हु जीवणं ॥4 ॥

हुँ द्रव्य-गुण से ध्रुव अहा , वित परिणमन को प्राप्त हुँ।
परिणमन विश्वयत आप्तमय , शक्ति से विश्वय आप हुँ॥
कारण स्वयं हुँ कार्य भी ,शिवमार्ग स्वयं हुँ मार्गफल।
"मैं भावलिंगी संत हुँ", ज्ञायक हुँ मैं, जीवन सफल ॥4 ॥